Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

छायावादी युगीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

डॉ. आर. एम. शिंदे
प्राध्यापक तथा अध्यक्ष
हिंदी विभाग
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,अंबाजोगाई

आधुनिक काल के तृतीय चरण के काव्य को छायावादी काव्य कहा गया है। छायावाद का समय सन् 1920 ई. से सन् 1936 ई. तक माना गया है। हिन्दी साहित्य में छायावाद वह युग जिसमें राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है। छायावाद का समय भारतीय राजनीति के उथल-पुथल का समय है। ईसी युग में असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, अंग्रेजी सुधारों की विफलता के बाद भारतीय समाज में एकता,आपसी समन्वय,व्यवस्थित एंव लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए संघर्ष की बेचैनी दिख रही है। काँग्रेसी दल का बढ़ता प्रभाव, गांधीजी के प्रयास, साइमन कमीशन, मोतीलाल नेहरु की रिपोर्ट, मजदूर आंदोलन, नमक आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, गोलमेज सम्मेलन आदि घटनाओ ने भारतीय राजनीति एवं समाज में देश में काफी कुछ बदलाव किया है। देश में अंग्रेजी शासन के प्रति जनता का आक्रोश था और अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति से भारत को मुक्त करा लेने के जी-तोड़ प्रयास किए जा रहे हैं। सत्याग्रह के आरम्भिक प्रयोगों ने गांधी जी को आम जनता के निकट तथा नेता का रूप प्रदान किया है। राष्ट्रीय आंदोलन के लिए यह वैचारिकता की म.गांधी जी की एक महान उपलब्धि है। अंग्रेजी राजनीतियों के कारण ही लोगों को राष्ट्रीय पैमाने पर संगठित होने की जरूरत महसूस हुई हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में जो युग छायावाद के नाम से जाना जाता है, वह एक प्रभावशाली तथा वैचारिक काव्यान्दोलन है। इस आंदोलन का आरम्भ और राष्ट्रीय मंच पर गांधी जी का आगमन लगभग आस-पास ही हुआ है। जिसे युगीन प्रभाव के रूप में देख सकते है। छायावाद की युगीन प्रवृत्तियों के कारण विजयदेव नारायण साही ने इसे सत्याग्रह युग तक कहा है। इस युग के रचनाकारों ने गांधी के संघर्ष को महत्वपूर्ण मानते हुए तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना को अपने साहित्य के केन्द्र में रखा है। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने युगीन आन्दोलन का उल्लेख अपनी रचनाओं में किया है। इस धारा के रचनाकारों में माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा और दिनकर आदि प्रमुख कवि रहे हैं।

'माखनलाल चतुर्वेदी' बीसवी सदी के प्रथम चरण में जिन मनीषियों के प्रयत्न से हिन्दी साहित्य के क्षितिज का विस्तार हुआ, उनमें माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशिष्ट हैं। हिन्दी कविता को उन्होंने व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर, अधूरी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश करना और प्रादेशिक, राष्ट्रीय संगठन के अध्यक्ष पद तक पहुँचना साधारण घटना नही है। इससे स्पष्ट होता है कि वे साहित्य और राष्ट्र के प्रति बहुत जागरूक रहे है।

'एक भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात माखनलाल चतुर्वेदी, भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग की राष्ट्रीय भावना को अपनी कविता में विशेष स्थान देते हैं। 'मरण त्यौहार' को स्वीकार करने वाले कवि के लिए देश की बलिदेवी पर बलि हो जाना ही शेष रह गया है। इस भाव को कवि ने अपनी प्रसिध्द कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में व्यक्त किया हैं।

"चाह नही मै सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शिश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेका।"[1]

प्रस्तुत कविता में कवि ने एक पुष्प को उस पथ पर अपना बलिदान देने के लिए तत्पर दिखाया है, जो बलिदानी वीरों का पथ है। कविता की आत्मा, बलिदान के वस्तुओं से निर्मित हुई है। कवि की भावी साधना इसमें इंगित हैं। एक स्वर में कवि की चेतना में राष्ट्र-मुक्ति की भावना के प्रति प्रतिबध्द है। चतुर्वेदी जी अंग्रेजी राज में भारतियों की स्थिति को लेकर चिंतित दिखते है। उस समय भारतियों के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा था। इस बारें में सन् 1930 में जबलपुर सेन्द्रल जेल में उन्होंने **'न्याय तुम्हारा कैसा'** यह कविता लिखी है। यथा

"प्रिय न्याय तुम्हारा कैसा, अन्याय तुम्हारा कैसा?
.. ..
मल धोता, जीवन बोता, छोडें आंसू का सोता,
जब जग हरियाला होता, तब वह हरियाला होता।
उसके पड़ोस में ही हा यह हत्यारे का घर है,
जो रक्तमयी तड़पन पर करता दिन-रात गुजर है।"[2]

ब्रिटीश शासन की दमन नीति के विरूध्द कवि का यह हुंकार उनके निर्भिकता का परीचायक है। प्रसाद का युग स्वाधीनता संग्राम का युग है। सम्पूर्ण राष्ट्र, अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने के लिए प्रयत्नशील है। गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम अपनी पुरी उष्मा को प्राप्त कर सका है। जगह-जगह पर हो रहें प्रदर्शनों, धरनों और ब्रिटीश सरकार के असहयोग किया जा रहा है। स्वतंत्रता के लिए भारतवासियों को मानसिक परतंत्रता से मुक्ति जरुरी है। प्रसाद की प्रत्येक रचना में चाहे वह कविता हो, कहानी हो, उपन्यास हो या नाटक हो सभी में राष्ट्र-मुक्ति की बेचैनी और अंग्रेजी राज में भारत की दशा को लेकर चिन्ता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। जयशंकर प्रसाद का प्रथम कहानी संग्रह 'छाया' है। जिसमें अधिकांश कहानियाँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित हैं। जिसका सम्बंध राष्ट्र-मुक्ति आंदोलन से सीधे तौर पर भले न जुड़ा हो पर हमारे भीतर राष्ट्रप्रेम का भाव भरने में सक्षम है। 'शरणागत' कहानी में वे अंग्रेजी शासन में सिपाहियों के द्वारा गांव वाले पर किये गये अत्याचारों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते है। जैसे:-"किशोर सिंह बाहर आ गये, देखा तो पाँच कोस पर जो उनका सुन्दरपुर ग्राम है, उसे सिपाहियों ने लूट लिया और प्रजा दुखी होकर अपने जमींदार से अपनी दु:ख गाथा सुनाने आयी है।"[3]

इस कहानी के कथा सूत्र में अंग्रेजी शासन को देखा जाता हैं। 'तितली' उपन्यास में अंग्रेजी राज के प्रतिनिधि रूप में बार्टली और वाट्सन का चरित्र क्रमश: निरंकुश और जेंटिलमैन का है। उपन्यास में प्रसाद जी की चकबंदी को नाम पर किसानों की जमीन हड़पने की साजिश का पर्दाफाश किया गया है।

जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविताओं में अंग्रेजी राज के बारे में बहुत कुछ लिखा है। उनके प्रलय की छाया, कामायनी, शेरसिंह का शस्त्र-समर्पण, पेशोला की प्रतिध्वनि, अशोक की चिन्ता, हिमाद्री तुंग श्रृंग से आदि कविताओं में पराधीन भारत की व्यथा और उससे मुक्ति का भाव व्यक्त हुआ है। इन रचनाओं में राष्ट्रीय आंदोलन और चेतना के तत्व ऐतिहासिक प्रसंगों द्वारा व्यंजित होते हैं। 'अशोक की चिन्ता' में देशवासियों को अवगत करते हुए उन्हें राष्ट्र-मुक्ति आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं।

"जलता है यह जीवन पतंग
जीवन कितना? अति लघू क्षण,
ये शलभ-पुंज से कण-कण,
तृष्णा वह अनलशिखा बन
दिखलाती रक्तिम यौवन
जलने को क्यों न उठे उमंग।"[4]

जयशंकर प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त'नाटक साहित्य में दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय गीतों की रचना की हैं। जिसके द्वारा ब्रिटीश साम्राज्यवाद के विरूध्द राष्ट्रीय चेतना का भाव उत्पन्न करते हुए राष्ट्र के विशिष्टता एवं महत्व को प्रतिपादित किया है।

"हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आये थे नहीं।
जातियों का उत्थान-पतन आंधियां, झड़ी, प्रचंड समीर।"[5]

प्रसाद जी की यह कविता हमारी जातीयता को एक नया आयाम देती है और जातीयता का स्वर उद्घाटित कर उपनिवेशवाद के विरूध्द शंखनाद करती हैं।

निराला की मातृभूमी, शिवाजी का पत्र, जागो फिर एक बार, तुलसीदास, राम की शक्तिपूजा, भारती जय विजय करें, आदि कविताओं में राष्ट्र, संस्कृति, धर्म और व्यक्ति की मुक्ति को लेकर चिंता हैं। निराला ने 'जागो फिर एक बार' कविता में गुरूगोविंद सिंह की वीरता का गान करते हुए भारतियों को अंग्रेजों के खिलाफ मुक्ति के लिए प्रेरणा दी हैं।

'जागो फिर एक बार!

समर में अमर कर प्राण,

गान गाये महासिन्धु-से

सिन्धु-नद-तरिवासी!

सैन्धव तुरंगों पर चतुरंग, चमू संग,

सवा-सवा लाख पर एक को चढ़ाऊँगा,

गोविन्द सिंह निज नाम जब कहाऊँगा'।[6]

निराला की विप्लय के बादल, जम्मभूमि, दिल्ली, भारती जय विजय करे, वर दे वीणावादिनी वर दे, गये रूप पहचान, स्वाधीनता पर, मातृ-अर्चना, भारतमाता, आदि कविताओं में देशप्रेम और शोषण से मुक्ति की बात भी कहते हैं।

छायावादी कवियों पर बहुत दिनों तक यह आरोप लगाया जाता रहा कि जिस समय देश. औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध अपनी स्वाधीनता के संग्राम में संलग्न था, ये कवि राष्ट्रीय प्रश्नों से उदासीन और विरत होकर क्षितिज के पार ताक-झाँक करते रहे। यह वस्तुत: छायावादी काव्य को एकांगी दृष्टि से देखने

का परिणाम है, वरना इन कवियों ने ओजस्वी स्वर में जागरण-गीत भी कम नहीं लिखे। प्रसाद जी की हिमालय के आंगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार' और 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' जैसे गीत, निराला की 'भारति जय विजय करे', और 'महाराजा शिवाजी के नाम पत्र' जैसी रचनाएँ इसका प्रमाण हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 149
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012
2. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 150
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012
3. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 153
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012
4. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 156
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012
5. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 157
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012
6. अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य, संजय जायसवाल, पृ. 160
   आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012